National Journal of
Hindi & Sanskrit Research

ISSN: 2454-9177
NJHSR 2026; 1(65): 358-361
© 2026 NJHSR
www.sanskritarticle.com

Dr. Mou Goswami
Assistant Professor,
Dept. of Education,
Central Sanskrit University,
Shri Sadashiv Campus, Puri
Odisha

Correspondence:
Dr. Mou Goswami
Assistant Professor,
Dept. of Education,
Central Sanskrit University,
Shri Sadashiv Campus, Puri
Odisha

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के आलोक में अध्यापक शिक्षा का भविष्य: कृत्रिम बुद्धिमत्ता और भारतीय ज्ञान परंपरा का समन्वय

Dr. Mou Goswami

सारांश:

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020 भारतीय शिक्षा व्यवस्था में एक व्यापक एवं दूरदर्शी परिवर्तन का आधार प्रस्तुत करती है। यह नीति केवल पाठ्यचर्या एवं मूल्यांकन प्रणाली में सुधार तक सीमित नहीं है, बल्कि अध्यापक शिक्षा, डिजिटल प्रौद्योगिकी, भारतीय ज्ञान परंपरा तथा समग्र मानव विकास के मध्य संतुलित समन्वय स्थापित करने पर विशेष बल देती है। वर्तमान समय में कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) ने शिक्षण-अधिगम की प्रक्रिया, मूल्यांकन प्रणाली, शैक्षिक प्रशासन तथा ज्ञान के सृजन एवं प्रसार के स्वरूप को व्यापक रूप से प्रभावित किया है। दूसरी ओर भारतीय ज्ञान परंपरा (IKS) सत्य, नैतिकता, अनुभवात्मक अधिगम, समग्र व्यक्तित्व विकास तथा मानवीय मूल्यों पर आधारित शिक्षा की वकालत करती है। ऐसे परिदृश्य में अध्यापक शिक्षा के भविष्य को केवल तकनीकी दक्षता तक सीमित नहीं रखा जा सकता, बल्कि उसे भारतीय सांस्कृतिक एवं दार्शनिक दृष्टिकोण के साथ समन्वित करना आवश्यक हो जाता है।

यह शोध-लेख राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के परिप्रेक्ष्य में अध्यापक शिक्षा के बदलते स्वरूप का विश्लेषण करता है तथा यह स्पष्ट करने का प्रयास करता है कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता एवं भारतीय ज्ञान परंपरा का समन्वय भविष्य की अध्यापक शिक्षा को अधिक प्रभावी, समावेशी, नैतिक एवं नवाचारपरक बना सकता है। अध्ययन में यह भी विवेचित किया गया है कि AI आधारित शिक्षण-पद्धतियाँ, वैयक्तिकीकृत अधिगम (Personalized Learning), डेटा-आधारित मूल्यांकन तथा डिजिटल संसाधनों का उपयोग तभी सार्थक होगा जब उन्हें भारतीय ज्ञान परंपरा के मानवीय मूल्यों, आलोचनात्मक चिंतन, सह-अस्तित्व, आत्मानुशासन तथा सामाजिक उत्तरदायित्व के साथ जोड़ा जाए। लेख के अंत में अध्यापक शिक्षा के लिए नीतिगत सुझाव प्रस्तुत किए गए हैं, जो भारत को ज्ञान-आधारित, मूल्यपरक एवं प्रौद्योगिकी-सक्षम शिक्षा व्यवस्था की दिशा में अग्रसर करने में सहायक हो सकते हैं।

प्रमुख शब्द: राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, अध्यापक शिक्षा, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, भारतीय ज्ञान परंपरा, डिजिटल शिक्षा, नैतिक शिक्षा, समग्र विकास, शिक्षक दक्षता।

भूमिका:

समकालीन युग ज्ञान, सूचना एवं प्रौद्योगिकी के तीव्र विकास से परिभाषित होता है। डिजिटल क्रांति, इंटरनेट, बिग डेटा, मशीन लर्निंग तथा कृत्रिम बुद्धिमत्ता जैसी उभरती प्रौद्योगिकियों ने शिक्षा की प्रकृति, उद्देश्य और प्रक्रियाओं में अभूतपूर्व परिवर्तन किए हैं। आज शिक्षण केवल कक्षा-कक्ष तक सीमित नहीं है, बल्कि ऑनलाइन मंचों, आभासी प्रयोगशालाओं, स्मार्ट कक्षाओं, अनुकूलित अधिगम (Adaptive Learning) तथा AI आधारित शैक्षिक प्रणालियों के माध्यम से निरंतर विकसित हो रहा

है। इस परिवर्तनशील परिदृश्य में शिक्षक की भूमिका भी केवल ज्ञान प्रदाता (Knowledge Provider) की नहीं रही, बल्कि वह अधिगम का मार्गदर्शक (Facilitator), प्रेरक (Mentor), शोधकर्ता (Researcher) तथा नवाचारकर्ता (Innovator) बनता जा रहा है। भारत में शिक्षा के इस बदलते स्वरूप को ध्यान में रखते हुए राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 लागू की गई, जिसका उद्देश्य शिक्षा को समग्र, बहुविषयी, लचीला, समावेशी तथा भविष्य उन्मुख बनाना है। इस नीति में स्पष्ट रूप से कहा गया है कि किसी भी शिक्षा प्रणाली की गुणवत्ता उसके शिक्षकों की गुणवत्ता पर निर्भर करती है। इसलिए अध्यापक शिक्षा को भारतीय शिक्षा सुधार का सबसे महत्वपूर्ण आधार माना गया है। नीति में चार वर्षीय समेकित बी.एड. कार्यक्रम, सतत व्यावसायिक विकास (Continuous Professional Development), डिजिटल दक्षता, बहुभाषिकता, अनुसंधान संस्कृति तथा भारतीय ज्ञान परंपरा के समावेश पर विशेष बल दिया गया है।

इसी समय कृत्रिम बुद्धिमत्ता ने शिक्षा के क्षेत्र में नई संभावनाओं के द्वार खोले हैं। AI आधारित शिक्षण प्लेटफ़ॉर्म विद्यार्थियों की सीखने की गति, रुचि एवं आवश्यकताओं के अनुसार व्यक्तिगत शिक्षण सामग्री उपलब्ध करा सकते हैं। स्वचालित मूल्यांकन, अधिगम विश्लेषण (Learning Analytics), वर्चुअल ट्यूटर जैसी तकनीकों ने शिक्षा को अधिक सुलभ एवं प्रभावी बनाया है। किंतु इन तकनीकों के बढ़ते उपयोग के साथ अनेक नैतिक प्रश्न भी सामने आए हैं, जैसे- डेटा गोपनीयता, एल्गोरिथ्मिक पक्षपात (Algorithmic Bias), मानवीय संवेदनाओं की उपेक्षा तथा शिक्षक की भूमिका में संभावित परिवर्तन। दूसरी ओर भारतीय ज्ञान परंपरा शिक्षा को केवल सूचना या कौशल प्राप्त करने का माध्यम नहीं मानती, बल्कि उसे आत्म-विकास, नैतिकता, सामाजिक उत्तरदायित्व एवं लोककल्याण का साधन मानती है। वैदिक शिक्षा, उपनिषदों का संवादात्मक शिक्षण, गुरु-शिष्य परंपरा, बौद्ध विहारों की वाद-विवाद पद्धति, तक्षशिला एवं नालंदा जैसे प्राचीन विश्वविद्यालयों की ज्ञान परंपरा तथा भगवद्गीता में वर्णित कर्तव्य, आत्मानुशासन और विवेक, ये सभी शिक्षा को समग्र जीवन दृष्टि से जोड़ते हैं।

आज आवश्यकता इस बात की है कि अध्यापक शिक्षा में तकनीकी दक्षता और मानवीय मूल्यों के बीच संतुलन स्थापित किया जाए। यदि AI शिक्षक को अधिक सक्षम बनाता है, तो भारतीय ज्ञान परंपरा उसे अधिक संवेदनशील, नैतिक और उत्तरदायी बनाती है। इसलिए भविष्य की अध्यापक शिक्षा केवल डिजिटल दक्षता पर आधारित नहीं हो सकती; उसे ऐसी समेकित दृष्टि अपनानी होगी जिसमें वैज्ञानिक सोच और भारतीय सांस्कृतिक-दार्शनिक मूल्यों का संतुलित समन्वय हो।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 और अध्यापक शिक्षा का बदलता स्वरूप

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भारतीय शिक्षा व्यवस्था में एक युगांतरकारी दस्तावेज़ है, जिसका उद्देश्य शिक्षा को ज्ञान-केंद्रित, कौशल-केंद्रित तथा मूल्य-केंद्रित बनाना है। नीति यह स्वीकार करती है कि किसी भी राष्ट्र की प्रगति उसके शिक्षकों की गुणवत्ता पर निर्भर करती है। इसलिए अध्यापक शिक्षा को शिक्षा सुधार का आधार स्तंभ माना गया है।

पूर्ववर्ती अध्यापक शिक्षा व्यवस्था पर यह आलोचना की जाती रही कि वह अधिकतर परीक्षा-उन्मुख, सैद्धांतिक तथा व्यवहारिक आवश्यकताओं से दूर थी। अनेक शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों में अनुसंधान, नवाचार, डिजिटल दक्षता एवं विद्यालयी अनुभव का अभाव देखा गया। परिणामस्वरूप प्रशिक्षित शिक्षक भी बदलती शैक्षिक आवश्यकताओं का प्रभावी ढंग से सामना नहीं कर पाते थे।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 इन चुनौतियों का समाधान प्रस्तुत करती है। नीति के अनुसार वर्ष 2030 तक चार वर्षीय समेकित बी.एड. कार्यक्रम को शिक्षक बनने की न्यूनतम योग्यता के रूप में विकसित करने का लक्ष्य रखा गया है। इसका उद्देश्य विषय-ज्ञान, शिक्षण कौशल, शोध क्षमता, नैतिक मूल्यों तथा व्यावहारिक प्रशिक्षण का एकीकृत विकास करना है। साथ ही, अध्यापक शिक्षा संस्थानों को बहुविषयी विश्वविद्यालयों से जोड़ने तथा अनुसंधान एवं नवाचार की संस्कृति विकसित करने पर भी बल दिया गया है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति में शिक्षकों के सतत व्यावसायिक विकास (Continuous Professional Development– CPD) की अवधारणा को विशेष महत्व दिया गया है। इसके अंतर्गत प्रत्येक शिक्षक को नियमित प्रशिक्षण, नई तकनीकों का उपयोग, डिजिटल शिक्षण, समावेशी शिक्षा, बहुभाषिक शिक्षण तथा नवीन मूल्यांकन पद्धतियों का ज्ञान प्राप्त करना आवश्यक माना गया है। यह दृष्टिकोण इस तथ्य पर आधारित है कि बदलती सामाजिक एवं तकनीकी परिस्थितियों में शिक्षक को आजीवन सीखने वाला (Lifelong Learner) होना चाहिए।

इसके अतिरिक्त, नीति भारतीय भाषाओं, स्थानीय ज्ञान, अनुभवात्मक अधिगम, आलोचनात्मक चिंतन, रचनात्मकता तथा नैतिक शिक्षा को शिक्षक प्रशिक्षण का अभिन्न अंग बनाने की अनुशंसा करती है। यह दृष्टिकोण स्पष्ट करता है कि भविष्य का शिक्षक केवल डिजिटल तकनीकों का उपयोग करने वाला विशेषज्ञ नहीं होगा, बल्कि वह भारतीय ज्ञान परंपरा से प्रेरित एक संवेदनशील, उत्तरदायी एवं नवाचारी शिक्षाविद् होगा।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता और भारतीय ज्ञान परंपरा का समन्वय : अध्यापक शिक्षा की नई दिशा:

(i)कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI): 21वीं सदी की सबसे प्रभावशाली तकनीकी उपलब्धियों में से एक है। यह ऐसी संगणकीय प्रणाली है जो मानवीय बुद्धि से संबंधित कार्यों- जैसे सीखना, तर्क करना, समस्या समाधान, निर्णय लेना तथा भाषा को समझना, का अनुकरण करने में सक्षम होती है। मशीन लर्निंग, प्राकृतिक भाषा संसाधन (Natural Language Processing) तथा डेटा विश्लेषण जैसी तकनीकों ने AI को शिक्षा के क्षेत्र में अत्यंत उपयोगी बना दिया है।

वर्तमान समय में शिक्षा केवल ज्ञान प्रदान करने की प्रक्रिया नहीं रह गई है, बल्कि यह व्यक्तिगत आवश्यकताओं, सीखने की गति तथा विविध अधिगम शैलियों के अनुरूप विकसित हो रही है। इस संदर्भ में AI शिक्षा को अधिक व्यक्तिगत, लचीला तथा प्रभावी बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

AI आधारित अधिगम प्रणालियाँ विद्यार्थियों की सीखने की गति, उपलब्धि स्तर तथा कठिनाइयों का विश्लेषण करके उनके लिए उपयुक्त शिक्षण सामग्री उपलब्ध कराती हैं। इसे वैयक्तिकीकृत अधिगम (Personalized Learning) कहा जाता है। उदाहरण के लिए यदि किसी विद्यार्थी को गणित के किसी विशेष विषय में कठिनाई हो रही है, तो AI प्रणाली उसकी आवश्यकता के अनुसार अतिरिक्त अभ्यास, वीडियो अथवा वैकल्पिक शिक्षण सामग्री प्रदान कर सकती है।

इसी प्रकार AI आधारित मूल्यांकन प्रणालियाँ विद्यार्थियों की प्रगति का त्वरित विश्लेषण करके शिक्षकों को उपयोगी प्रतिपुष्टि (Feedback) उपलब्ध कराती हैं। इससे शिक्षक प्रत्येक विद्यार्थी की आवश्यकताओं को बेहतर ढंग से समझ सकते हैं तथा उपयुक्त शैक्षिक हस्तक्षेप कर सकते हैं।

हालाँकि AI के बढ़ते उपयोग के साथ कुछ गंभीर चिंताएँ भी सामने आई हैं। अत्यधिक तकनीकी निर्भरता विद्यार्थियों की रचनात्मकता, सामाजिक सहभागिता तथा मानवीय संवेदनशीलता को प्रभावित कर सकती है। इसके अतिरिक्त डेटा गोपनीयता, एल्गोरिथ्मिक पक्षपात, डिजिटल असमानता तथा शैक्षिक निर्णयों में मानवीय विवेक की कमी जैसे प्रश्न भी महत्वपूर्ण हैं। इसलिए शिक्षा में AI का उपयोग केवल तकनीकी दृष्टि से नहीं, बल्कि नैतिक एवं मानवीय दृष्टिकोण से भी किया जाना चाहिए।

(ii)भारतीय ज्ञान परंपरा: शिक्षा का मानवीय एवं समग्र दृष्टिकोण

भारतीय ज्ञान परंपरा विश्व की सबसे प्राचीन एवं समृद्ध ज्ञान परंपराओं में से एक है। इसका आधार केवल बौद्धिक विकास नहीं, बल्कि व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक, नैतिक तथा आध्यात्मिक विकास पर आधारित है। भारतीय चिंतन में शिक्षा का उद्देश्य केवल रोजगार प्राप्त करना नहीं, बल्कि व्यक्ति के चरित्र, विवेक और सामाजिक उत्तरदायित्व का विकास करना है।

वैदिक साहित्य, उपनिषद, भगवद्गीता, बौद्ध दर्शन, जैन दर्शन, योगशास्त्र तथा भारतीय दार्शनिक परंपराएँ शिक्षा को आत्मबोध, सत्य की खोज तथा मानव कल्याण का साधन मानती हैं। उपनिषदों में संवादात्मक शिक्षण पद्धति का उल्लेख मिलता है, जिसमें शिक्षक और शिक्षार्थी के बीच सक्रिय विचार-विमर्श के माध्यम से ज्ञान का निर्माण होता है। आधुनिक शिक्षा मनोविज्ञान भी इसी प्रकार के सक्रिय एवं सहभागितापूर्ण अधिगम को प्रभावी मानता है।

भारतीय ज्ञान परंपरा में गुरु को केवल विषय विशेषज्ञ नहीं, बल्कि जीवन मार्गदर्शक माना गया है। गुरु का कार्य विद्यार्थियों में विवेक, आत्मविश्वास, नैतिकता तथा सामाजिक चेतना का विकास करना है। यह दृष्टिकोण वर्तमान समय में अत्यंत प्रासंगिक है, जब शिक्षा अनेक बार केवल परीक्षा एवं रोजगार तक सीमित होती जा रही है।

भगवद्गीता में वर्णित निष्काम कर्म, आत्मानुशासन, कर्तव्यबोध तथा निर्णय क्षमता जैसे सिद्धांत आधुनिक अध्यापक शिक्षा के लिए अत्यंत उपयोगी हैं। इसी प्रकार योग शिक्षा, ध्यान, आत्मचिंतन तथा भावनात्मक संतुलन की अवधारणाएँ विद्यार्थियों और शिक्षकों दोनों के मानसिक स्वास्थ्य एवं समग्र विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने भारतीय ज्ञान परंपरा को शिक्षा व्यवस्था का महत्वपूर्ण अंग माना है। नीति में भारतीय भाषाओं, स्थानीय ज्ञान, सांस्कृतिक विरासत, नैतिक शिक्षा तथा भारतीय बौद्धिक परंपराओं को पाठ्यक्रम एवं अध्यापक शिक्षा में शामिल करने की अनुशंसा की गई है। इसका उद्देश्य ऐसी शिक्षा व्यवस्था विकसित करना है जो वैश्विक दृष्टि के साथ-साथ भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों से भी जुड़ी हो।

(iii)अध्यापक शिक्षा में कृत्रिम बुद्धिमत्ता और भारतीय ज्ञान परंपरा का समन्वय:

भविष्य की अध्यापक शिक्षा के संदर्भ में सबसे महत्वपूर्ण प्रश्न यह है कि क्या आधुनिक तकनीकी प्रगति और पारंपरिक ज्ञान प्रणालियों के बीच संतुलन स्थापित किया जा सकता है? राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का उत्तर स्पष्ट रूप से हाँ है। यह नीति आधुनिक विज्ञान और प्रौद्योगिकी को स्वीकार करते हुए भारतीय ज्ञान परंपरा के मूल्यों के संरक्षण एवं संवर्धन पर बल देती है।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता शिक्षक को अधिक दक्ष, प्रभावी और तकनीकी रूप से सक्षम बना सकती है, जबकि भारतीय ज्ञान परंपरा उसे मानवीय, नैतिक तथा संवेदनशील बनाती है। इसलिए दोनों का समन्वय भविष्य की अध्यापक शिक्षा के लिए अत्यंत आवश्यक है।

उदाहरण के लिए AI आधारित शिक्षण प्रणाली विद्यार्थियों की सीखने की कठिनाइयों का विश्लेषण कर सकती है, लेकिन विद्यार्थियों की भावनात्मक आवश्यकताओं, सामाजिक परिस्थितियों तथा नैतिक विकास को समझने की क्षमता अभी भी मुख्यतः शिक्षक के पास ही है। यहाँ भारतीय ज्ञान परंपरा शिक्षक को सहानुभूति, करुणा, धैर्य तथा नैतिक नेतृत्व जैसे गुण प्रदान करती है।

इसी प्रकार AI विद्यार्थियों को त्वरित सूचना और ज्ञान उपलब्ध करा सकता है, किंतु ज्ञान के विवेकपूर्ण उपयोग, सत्य-असत्य के भेद तथा सामाजिक उत्तरदायित्व की शिक्षा भारतीय दार्शनिक परंपराओं से प्राप्त होती है। यदि शिक्षा केवल तकनीकी दक्षता तक सीमित हो जाए और नैतिकता से दूर हो जाए, तो उसका परिणाम सामाजिक असंतुलन के रूप में सामने आ सकता है।

अध्यापक शिक्षा कार्यक्रमों में AI तथा भारतीय ज्ञान परंपरा के समन्वय के लिए निम्न पहलुओं पर विशेष ध्यान दिया जा सकता है-

o AI साक्षरता और नैतिक शिक्षा का एकीकरण।

o डिजिटल शिक्षण के साथ मूल्य-आधारित शिक्षण।

- डेटा विश्लेषण के साथ मानवीय संवेदनशीलता का विकास।
- तकनीकी नवाचार के साथ सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना।
- व्यक्तिगत अधिगम के साथ सामूहिक कल्याण की अवधारणा।
- योग, ध्यान और भावनात्मक संतुलन को शिक्षक प्रशिक्षण का भाग बनाना।

इस प्रकार भविष्य का शिक्षक केवल तकनीकी विशेषज्ञ नहीं होगा, बल्कि वह ऐसा शिक्षाविद् होगा जो आधुनिक तकनीकी संसाधनों का उपयोग करते हुए विद्यार्थियों के समग्र विकास, नैतिक निर्माण तथा सामाजिक उत्तरदायित्व को भी समान महत्व देगा।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 इसी संतुलित दृष्टिकोण को आगे बढ़ाती है। यह नीति शिक्षा को केवल डिजिटल परिवर्तन तक सीमित नहीं रखती, बल्कि उसे भारतीय ज्ञान, मानवीय मूल्यों तथा वैश्विक दक्षताओं के समन्वित स्वरूप में विकसित करने का प्रयास करती है। यही दृष्टिकोण भविष्य की अध्यापक शिक्षा को अधिक प्रासंगिक, समावेशी तथा टिकाऊ बना सकता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के परिप्रेक्ष्य में अध्यापक शिक्षा का भविष्य तकनीकी दक्षता और मानवीय मूल्यों के संतुलित समन्वय पर आधारित होगा। कृत्रिम बुद्धिमत्ता तथा भारतीय ज्ञान परंपरा का एकीकृत दृष्टिकोण अध्यापक शिक्षा को अधिक प्रभावी, समावेशी और नवाचारपरक बना सकता है। इस समन्वय से शिक्षक केवल डिजिटल उपकरणों का उपयोग करने वाला व्यक्ति नहीं रहेगा, बल्कि वह तकनीक के नैतिक, रचनात्मक और मानवीय उपयोग को समझने वाला शिक्षाविद् बनेगा।

निष्कर्ष:

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भारत की शिक्षा व्यवस्था को ज्ञान आधारित, कौशल आधारित और मूल्य आधारित बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल है। इस नीति के अंतर्गत अध्यापक शिक्षा को विशेष महत्व दिया गया है क्योंकि शिक्षक ही शिक्षा परिवर्तन के वास्तविक वाहक होते हैं।

वर्तमान तकनीकी युग में कृत्रिम बुद्धिमत्ता शिक्षा के क्षेत्र में व्यापक परिवर्तन ला रही है। AI व्यक्तिगत अधिगम, प्रभावी मूल्यांकन, डिजिटल संसाधनों और नवाचारपूर्ण शिक्षण के लिए नए अवसर प्रदान करती है। लेकिन केवल तकनीकी विकास शिक्षा के वास्तविक उद्देश्यों को पूरा नहीं कर सकता। शिक्षा को मानवीय संवेदनाओं, नैतिक मूल्यों और सामाजिक उत्तरदायित्व से जोड़ना आवश्यक है।

यहीं भारतीय ज्ञान परंपरा की भूमिका महत्वपूर्ण हो जाती है। भारतीय दर्शन शिक्षा को आत्म-विकास, चरित्र निर्माण और लोककल्याण की प्रक्रिया मानता है। इसलिए AI और भारतीय ज्ञान परंपरा का समन्वय भविष्य की अध्यापक शिक्षा के लिए एक संतुलित मार्ग प्रस्तुत करता है।

भविष्य का शिक्षक वह होगा जो कृत्रिम बुद्धिमत्ता की शक्ति को समझते हुए भारतीय ज्ञान परंपरा के मानवीय मूल्यों को संरक्षित रख सके। ऐसा शिक्षक तकनीकी रूप से सक्षम होने के साथ-साथ संवेदनशील, नैतिक, रचनात्मक और समाज के प्रति उत्तरदायी होगा। इस प्रकार AI और भारतीय ज्ञान परंपरा का समन्वय भारत में एक ऐसी अध्यापक शिक्षा व्यवस्था के निर्माण में सहायक हो सकता है जो वैश्विक चुनौतियों का सामना करने के साथ-साथ अपनी सांस्कृतिक एवं नैतिक पहचान को भी बनाए रखे।

संदर्भ:

- चक्रवर्ती, उत्पल. (2019). आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (हिंदी संस्करण). नई दिल्ली: BPB Publications.
- घोष, श्यामाश्री. आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI). अलीगढ़: राजमंगल प्रकाशन.
- शिक्षा मंत्रालय. (2020). *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020*. भारत सरकार.
- Luckin, R. (2018). Machine Learning and Human Intelligence: The Future of Education for the 21st Century. UCL IOE Press.
- भारतीय ज्ञान परंपरा प्रभाग. (2022). Indian Knowledge Systems: Concepts and Framework. Ministry of Education, Government of India.
- जोशी, प्रह्लाद रा. (2007). *अध्यापकशिक्षा*, तिरुपति:, राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ।